International Journal of Advanced Academic Studies 2020; 3(1): 377-379

E-ISSN: 2706-8927
P-ISSN: 2706-8919
www.allstudyjournal.com
IJAAS 2021; 3(1): 377-379
Received: 04-11-2020
Accepted: 23-12-2020

नागेन्द्र प्रताप सिंह
शोधार्थी शिक्षा, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

डॉ. अखिलेश कुमार श्रीवास्तव
प्राचार्य, श्रीराम कालेज, रौरा जिला रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
नागेन्द्र प्रताप सिंह
शोधार्थी शिक्षा, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

सतना जिले में उच्चतर माध्यमिक स्तर की किशोरवय बालिकाओं के आत्मविश्वास का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

नागेन्द्र प्रताप सिंह एवं डॉ. अखिलेश कुमार श्रीवास्तव

सारांश
विद्यालय स्तर की किशोरवय बालिकाओं के विषय में अगर हम जानकारी प्राप्त करते है, तो हमें पता चलता है कि आज बालिकाएँ बालकों की अपेक्षा कार्यशीलता, परीक्षा परिणाम की दृष्टि से अत्याधिक असमानता रखती है। बालिकाओं की संख्या में अधिकता के साथ ही उनका परीक्षाफल भी शत–प्रतिशत पाया जाता है। बालिकाओं के संवेगात्मक बुद्धि में भी अधिकता के कारण उच्च आत्मविश्वास, उच्च सम्मान, निम्न तनाव देखा जाता है। संवेगात्मक बुद्धि का सीधा सम्बन्ध आत्मविश्वास, प्रतिबल और आत्मसम्मान पर परिलक्षित होता है। इस शोध पत्र के माध्यम से उच्चतर माध्यमिक स्तर की किशोरवय बालिकाओं के आत्मविश्वास का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव की वर्तमान स्थिति तथा उनमे आने वाली कठिनाइयों का आंकलन किया गया है। शोध क्षेत्र में 79.17 प्रतिशत उत्तरदाता यह मानते है कि उच्चतर माध्यमिक स्तर की किशोरवय बालिकाओं के आत्मविश्वास का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

मुख्यशब्दः सतना जिला, उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, बालिकाएं, आत्मविश्वास एवं शैक्षणिक उपलब्धि।

प्रस्तावना
इक्कीसवीं सदी के इस युग में जबकि तकनीकी ने इतनी तरक्की कर ली है, अतः बालक, बालिकाओं की कार्यशैली, उनके व्यवहार तथा शिक्षा में भी परिवर्तन आया है, उनमें संवेगों के प्रति नियंत्रण उनकी शिक्षा की गुणवत्ता के आधार पर पाया गया। शिक्षित युवाओं में संवेगों की परिपक्वता किन्तु कुछ युवाओं में जो शैक्षिक रूप से पिछड़े हुए हैं, उनमें संवेगों पर नियंत्रण की क्षमता में कमी, तनाव की अधिकता, आत्मविश्वास में कमी तथा आत्म सम्मान में कमी महसूस करते हैं।
आत्मविश्वास में अधिकता के कारण बालिकाओं का आत्मनिर्भर होना भी है, आज बालिकाएँ, बालकों के समान, तकनीकी ज्ञान के साथ–साथ व्यवहारिक ज्ञान भी प्राप्त कर रही है, बालकों के साथ बैठकर शिक्षा ग्रहण करती है, जिससे उनमें आत्मविश्वास बढ़ा है। कार्य शैली में भी अंतर देखा जा रहा है। बालकों की अपेक्षा बालिकाएँ चाहे वे शहरी क्षेत्र की हो या ग्रामीण क्षेत्र की उनमें उचित शिक्षा के माध्यम से व्यक्तित्व का विकास हो रहा है।
किशोरवय बालिकाओं में कुछ महत्वपूर्ण परिवर्तन होते हैं। क्रो एवं क्रों के अनुसार – ''जब बालक/बालिका 13 या 14 वर्ष की आयु में प्रवेश करता है, तो उसके प्रति दूसरों के और दूसरों के प्रति उसके कुछ दृष्टिकोण न केवल उसके अनुभवों में वरन् उसके सामाजिक सम्बन्धों में परिवर्तन करने लगे हैं।'' इस आधार पर किशोरवय बालिकाओं में अनेक परिवर्तन होते हैं।
किशोरवय बालिकाओं के व्यक्तित्व विकास में आत्मसम्मान, प्रतिबल और आत्मविश्वास की कमी के कारण व्यक्तित्व पर विपरीत प्रभाव पड़ा है, असंतुलन और समायोजन की समस्या आती है।
किशोरवय बालिकाओं में हो रहे शारीरिक परिवर्तन जिसके कारण वे स्वयं अपने आप में तनाव महसूस करती है। इस समय उन्हें यदि स्वस्थ माहौल एवं शिक्षा दी जाए तो वे स्वयं में हीनभावना से ग्रसित नहीं होंगी।
किशोरवय एक ऐसी अवस्था है, जिसमें बालिकाएँ स्वयं को अकेला व तनावग्रस्त महसूस करती है, उन्हे लगता है, कि उनकी जो समस्या है, वह शायद सबसे बड़ी है। इस स्थिति को समझना व समझाने हेतु उन्हें एक शिक्षक या मार्गदर्शक की आवश्यकता महसूस होती है। वह उसकी माँ, पिता, बहन, सहेली या कोई शिक्षिका भी हो सकती है। माता, पिता व शिक्षकों को ऐसी अवस्था को पहचानना व उसके साथ मित्रतापूर्ण व्यवहार करना आवश्यक हैं।

अध्ययन की आवश्यकता

अध्ययन के द्वारा शैक्षणिक दृष्टि से अल्प विकसित सतना जिले के उच्चतर माध्यमिक स्तर की किशोरवय बालिकाओं के आत्मविश्वास का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव की समीक्षा की जाएगी, वहीं दूसरी ओर इसमें आने वाली कठिनाइयों की जानकारी प्राप्त की जाएगी तथा उन्हें सशक्त बनाने के लिए अपने शोध कार्य में वास्तविक स्थिति का विश्लेषण कर सशक्त प्रभावी सुझाव प्रस्तुत कर सकेगा जिनका उपयोग न केवल शोध क्षेत्र में अपितु सम्पूर्ण देश में शिक्षा के विकास हेतु किया जा सकेगा।

शोध की परिकल्पनायें

सतना जिले के उच्चतर माध्यमिक स्तर की किशोरवय बालिकाओं के आत्मविश्वास का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

उद्देश्य

- उच्चतर माध्यमिक स्तर की किशोरवय बालिकाओं के आत्मविश्वास का पता लगाना।
- उच्चतर माध्यमिक स्तर की किशोरवय बालिकाओं के शैक्षणिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले कारको का पता लगाना।
- उच्चतर माध्यमिक स्तर की किशोरवय बालिकाओं के शैक्षणिक उपलब्धि के मार्ग में आने वाली समस्याओं व अवरोधों को ज्ञात करना।

शोध समस्या का सीमांकन

प्रस्तावित शोध कार्य का क्षेत्र सतना जिला है। इसके अन्तर्गत 8 विकासखण्ड – सतना (सोहावल), मझगवाँ, रामपुर बघेलान, नागौद, उचेहरा, अमरपाटन, रामनगर एवं मैंहर है। अतः जिला अन्तर्गत स्थित उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालय इस अध्ययन के अन्तर्गत सम्मिलित है।

अध्ययन विधिः प्रस्तुत शोध समस्या के अध्ययन हेतु अनुसंधान की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

समष्टि व प्रतिदर्शः इस अध्ययन की समष्टि में सतना जिले के 08 विकासखण्ड के उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालयों से 02 ग्रामीण व 02 शहरी विद्यालय अर्थात कुल 32 विद्यालयों से 2–2 शिक्षक कुल 64 शिक्षक, प्रत्येक विद्यालय के प्राचार्य, तथा प्रत्येक विद्यालय से 15 बालिकाएं कुल 480 का चयन दैव निदर्शन पद्धति से शोधार्थी ने अपने शोध के लिये चुना है।

शोध उपकरण

शोधकर्त्ता ने उच्चतर माध्यमिक स्तर की किशोरवय बालिकाओं के आत्मविश्वास का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करने हेतु साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया है।

पूर्ववर्ती शोध अध्ययनों का विवरण

किसी भी शोध कार्य को सोद्देश्य तथा अधिक प्रभावी बनाने के दृष्टिकोण से यह आवश्यक हो जाता है कि शोधार्थी अपनी शोध समस्या के समरूप पूर्व में किए गये अन्य शोध कार्यों के बारे में संक्षिप्त जानकारी प्राप्त कर ले। इसी दृष्टिकोण से शोधार्थी ने उच्चतर माध्यमिक स्तर की किशोरवय बालिकाओं के आत्मविश्वास का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव पर किये गये कुछ प्रमुख तथा सहज रूप से उपलब्ध पूर्व शोध अध्ययनों के विषय–वस्तु की जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया है। संक्षेप में उनका विवरण निम्न है – कौल लोकेश (1998)[1], मूज, आर. (1964)[2], थोर्प, एल.वी. और सैमुलर, ए.एम. (1965)[3], ओल्पोर्ट, जी.डब्ल्यू (1937)[4] व खान, प्रो. एस. एच. और श्रीमती शुक्ला भट्टाचार्य (1987)[5].

प्रदत्त संकलन विधि

प्राथमिक तथ्य सामग्री के संकलन हेतु प्रत्यक्ष साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से एवं द्वितीयक तथ्य सामाग्री के संकलन हेतु दस्तावेजी अध्ययन स्त्रोतों यथ विभागीय वार्षिक प्रशासकीय प्रतिवेदन, पूर्ववर्ती अध्ययन व शोध रिपोर्ट व इंटरनेट व अखवारों के माध्यम से तथ्य संकलन कर शोधकार्य पूरा किया गया है।

सतना जिला का सामान्य परिचय

सतना जिला 23.58°–25.12° उत्तरी अक्षांश 80.12 – 81.23° पूर्वी देशान्तर पर स्थित है। जिले समुद्र तल से ऊँचाई 317 मी. है, नागौद 626 मी., अमरपाटन और मैहर 537.06 मीटर है। सतना मध्यप्रदेश के उत्तर पूर्वी सीमा के मध्य स्थित वर्तमान रीवा संभाग का एक महत्वपूर्ण व्यवसायिक एवं औद्योगिक प्रधान जिला है। जिले के उत्तर में उत्तर प्रदेश का बाँदा जिला, पूर्व में रीवा एवं सीधी जिला, दक्षिण में शहडोल व जबलपुर जिला, तथा पश्चिम में पन्ना जिला स्थित है। जिला अपनी धार्मिक विरासतों, औद्योगिक संस्थानों, सांस्कृतिक ऐतिहासिक परिदृष्यों, प्रमुख वनोपज एवं खनिज के कारण सर्वोच्च शिखर पर है।

परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि, शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयोग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, जी कि निम्नानुसार है–

सारणी 1: उच्चतर माध्यमिक स्तर की किशोरवय बालिकाओं के आत्मविश्वास का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव का अध्ययन

क्र.	न्यादर्श	न्यादर्श में चयनित संख्या	उच्चतर माध्यमिक स्तर की किशोरवय बालिकाओं के आत्मविश्वास का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि पर सकारात्मक			
			प्रभाव पड़ता है		प्रभाव नही पड़ता है	
			संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1.	प्राचार्य	32	26	81.25	06	18.75
2.	शिक्षक	64	50	78.13	14	21.88
4.	छात्र	480	380	79.17	100	20.83
	योग	576	456	79.17	120	20.83

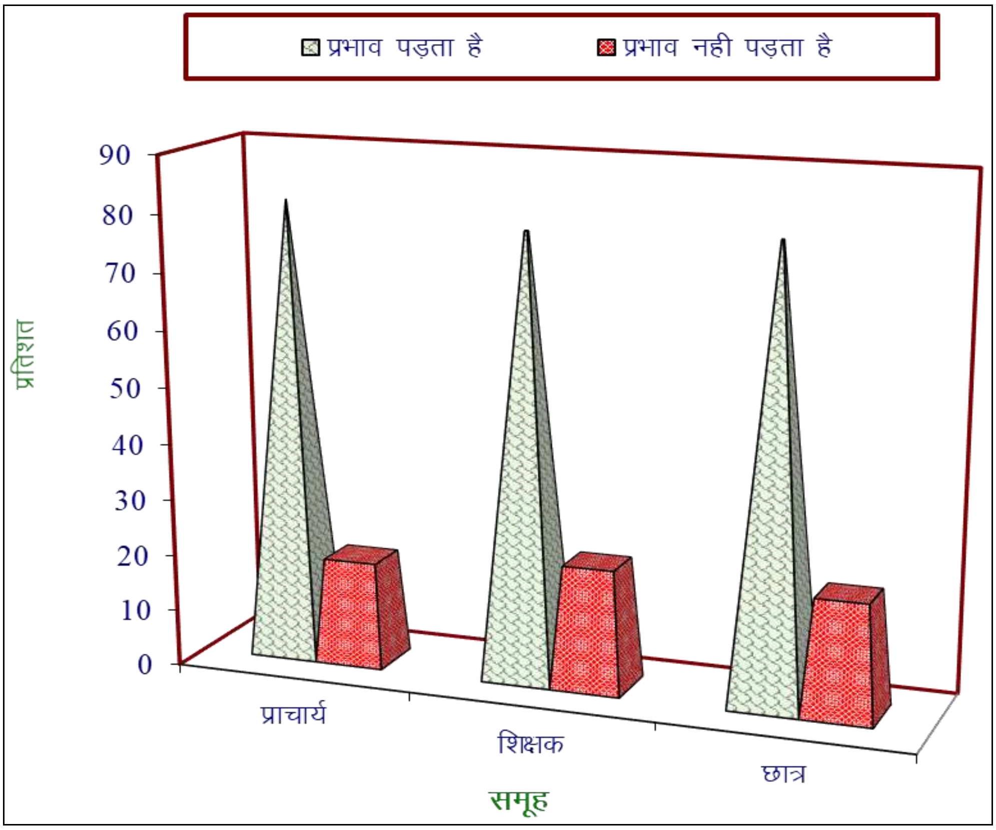

आरेख 1: उच्चतर माध्यमिक स्तर की किशोरवय बालिकाओं के आत्मविश्वास का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव का अध्ययन

उपरोक्त सारणी एवं आरेख से स्पष्ट होता है, कि शोध क्षेत्र के 81.25 प्रतिशत प्राचार्य, 78.13 प्रतिशत शिक्षक व 79.17 प्रतिशत छात्र यह मानते हैं, कि शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर की किशोरवय बालिकाओं के आत्मविश्वास का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है और शोध क्षेत्र के 20. 83 प्रतिशत छात्र, 21.88 प्रतिशत शिक्षक व 18.75 प्रतिशत प्राचार्य यह मानते हैं, कि शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर की किशोरवय बालिकाओं के आत्मविश्वास का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव नही पड़ता।

सांख्यिकीय विश्लेषण
काई वर्ग की गणना

आवृत्ति	प्रभाव पड़ता है	प्रभाव नही पड़ता है
F_o	79.17	20.83
F_e	50.00	50.00
F_o-F_e	29.17	-29.17
$(F_o-F_e)^2$	850.89	850.89
$\frac{(F_0-F_e)^2}{F_e}$	17.02	17.02

$$\chi^2 = \Sigma \frac{(F_0-F_e)^2}{F_e}$$

χ^2 त्र 34ण04

विश्लेषण एवं व्याख्या
शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर की किशोरवय बालिकाओं के आत्मविश्वास का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव की स्थिति ज्ञात करने के लिए प्राप्त आंकड़ों को काई वर्ग द्वारा विश्लेषित किया गया। गणना द्वारा χ^2 का मान 34.04 है, जबकि तालिकामान 1कपिर तथा 0.05 व 0.01 समअमस पर 3.84 व 6.63 है। गणना मान अधिक होने के कारण सार्थक है कि उच्चतर माध्यमिक स्तर की किशोरवय बालिकाओं के आत्मविश्वास का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। अतः परिकल्पना सत्यापित होती है।

निष्कर्ष
अनुसंधान के परिणामों से प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर यह ज्ञात हुआ कि सतना जिले में उच्चतर माध्यमिक स्तर की किशोरवय बालिकाओं के आत्मविश्वास का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

संदर्भ
1. कौल लोकेश : शैक्षिक अनुसंधान की कार्य प्रणाली, विकास पब्लिसिंग हाउस प्रा.लि., नई दिल्ली, 1998.
2. मूज, आर. : 'सोशल इकोलॉजी, मल्टी डाइमेन्सनल स्टडीज ऑफ ह्यूमन्स एण्ड ह्यूमन मिल्यूज इन हैम्बर्ग डी. एण्ड ब्रोडी, के (एडीटर्स) फन्टीयर्स ऑफ साइकोलाजी, वोल्यूम 6, अमेरिकन हैण्डबुक ऑफ साइकियाट्री बेसिक बोर्डस, न्यूयार्क, 1964; पृ.– 355–365.
3. थोर्प, एल.वी. और सैमुलर, ए.एम.: 'पर्सनाल्टी एण्ड इन्टर डिस्सपलीनरी एपरोज' न्यूयार्क: एन ईस्ट–वेस्ट एड., 1965.
4. ओल्पोर्ट, जी.डब्ल्यू: 'व्यक्तित्व' ए साइकोलोजीकल इन्टरप्रिटेशन, न्यूयार्क : हाल्ट, 1937.
5. खान, प्रो. एस. एच. और श्रीमती शुक्ला भट्टाचार्य, अध्यापकीय दर्शिका : परिवेशीय अध्ययन–कक्षा 1. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली (भारत), 1987, पृष्ठ 44.